मध्यकालीन हिन्दी) एम.ए.(हिन्दी) III सेमेस्टर

प्रश्न: मीरा की प्रेम साधना पर प्रकाश डालिए।

6th Paper

सगुण भक्ति-धारा में गोता लगाने वाली मीरा श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त थीं। कहा जाता है कि मीरा बचपन से ही श्रीकृष्ण के प्रति आकर्षित थीं। किंतु जब बड़ी हुई तो इनका विवाह राणा साँगा के ज्येष्ठ पुत्र श्री भोजराज से संपन्न हुआ। पर मीरा को वैवाहिक सुख भाग्य में न बदा था। जल्दी वह विधवा हो गयीं। फिर तो मीरा का समूचा जीवन सिमट कर श्रीकृष्ण की भक्ति में केंद्रीभूत हो गयी। मीरा को लोक-लाज और कुल की मर्यादा का भी ध्यान न रहा। इधर मीरा का देवर विक्रमाजीत मीरा की आचरण देखकर क्रोध से आग बबूला हो उठा। उसने मीरा को मरवाने के लिए तरह-तरह के यत्न किये, पर मीरा तो प्रेम दिवानी हो चुकी थी। इसने विष को भी अमृत समझ पी लिया। सच कहा गया है — "जाको राखे साइयाँ मार सके न कोय।" मीरा के अंदर प्रेम की अग्नि जल रही थी। वह दिन-रात श्रीकृष्ण की भक्ति में ही डूबी रहती थी।

मीरा की भक्ति में हमें इंद्रियातीत माधुर्य की झलक देखने को मिलती है। मीरा की भक्ति क्या है प्रेम की साधना है। इसे लगता है कि उसकी आत्मा जनम-जनम से श्रीकृष्ण की पतिव्रता रही है। पति के मृत्यु के बाद उसकी यह साधना और भी सघन हो गयी। यही कारण है कि उसके पदों में कभी कृष्ण कभी पूर्व जनम के साथी तो कभी "जनम-मरण के मीत" बनकर आते हैं।

मीरा की भक्ति, उसकी प्रेम-साधना गोपी के भाव की थी। वह अपने को "ललिता" नामक गोपी का अवतार मानती थीं। अपने पदों में उसने स्वयं को "गोकुल की अहीरिनी" कहा है। जब कभी भक्ति का अतिरेक हो जाता है, तो वह अपने को राधा तक कह लेती हैं —

"कोई राधा प्यारी अरज करत है सुन ले किसन मुरारी।
मीराँ के प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल पर वारी।"

स्वकीया-भाव का अपना प्रेम प्रकट करती हुई युग-युग के, जनम-जनम के, अपने पति के आगे नाचने, उसकी सेज पर सोने, उसे रिझाने में मीरा को कोई असमंजस नहीं, कोई संकोच नहीं है। तभी तो वह कहती है —

"श्री गिरिधर आगे नाचूँगी।
नाचि-नाचि पिया रसिक रिझाऊँ, प्रेमीजन को जाँचूँगी।"

Scanned with CamScanner

मीरा की इस आध्यात्मिक प्रेम-साधना में संयोग की मादकता है और वियोग की व्याकुलता दोनों हैं। कभी मीरा को लगता है कि उसके प्रियतम निठुर बनकर दूर चले गये हैं, उसकी सुध बिसार दी है और वह विरह में तड़प उठती है और कभी ऐसा लगता है कि उसके प्रियतम उसके पास आ रहे हैं, प्रायः आ ही चुके हैं। उसके चारों ओर की प्रकृति उसके प्रियतम के आने का संदेश दे रही है। प्रिय के आगमन की आहट से सारा वातावरण मादक और रोमांचित हो उठा है। पर दूसरे ही क्षण मीरा को ऐसी अनुभूति होती है कि मेरे प्रियतम अन्यत्र कहीं नहीं हैं, वे तो मेरे अंतरमन में ही विराज रहे हैं। तब यह बेचैनी क्यों? मीरा कहती है —

"जाके पियां परदेश बसत हैं, लिखि-लिखि भेजे पाती।
मेरो पिया मेरे हीय बसत हैं, ना कहूँ आती-जाती॥"

इस प्रकार मीरा के पदों में संयोग और वियोग दोनों पक्षों का चित्रण देखने को मिलता है। इसके कारण हैं, उसके प्रेम का आध्यात्मिक होना, उसकी इन्द्रियों का इन्द्रियातीत होना। इस प्रकार का आध्यात्मिक प्रेम मानसिक होता है, शारीरिक नहीं। उसका संयोग भौतिक या शारीरिक नहीं है, वह तो मानसिक प्रतीति मात्र है। अतः उसकी भक्ति में, उमंग, उत्साह और उल्लास देखने को मिलता है।

मीरा का पारिवारिक जीवन बड़ा दुखमय रहा है, इसलिए उसका जीवन ही विरहमय हो गया है। जीवन के अभाव की पूर्ति वह अपने प्रेम-भक्ति के द्वारा करना चाहती है। जीवन के दुर्लभ सुख संयोग को वह गिरिधर गोपाल की प्रेम-साधना, भक्ति द्वारा पाना चाहती हैं। इसलिए वह खुलकर कहती हैं —

"मेरो तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जिसके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई॥"

परन्तु इस प्रेम में वह अपने दर्द की भावना को भुलाने में भूल नहीं पाती है। फलतः संयोग का गीत गाते-गाते वह विरह का गीत गाने लगती हैं। फिर विरह की ज्वाला से छटपटाने लगती हैं, वह विरहमग्न हो जाती हैं। यहीं भक्ति में भी चैन देखने को नहीं मिलता। इसलिए उसके विरहजन्य पदों में भी भक्ति-जनित उल्लास देखने को मिलता है। उसकी अकथ वेदना में अकथ्य प्रेम की झाँकी देखने को मिलती है —

"हे री, मैं तो दरद दिवानी, मेरा दरद न जाणे कोय।

प्रेम की पीड़ा का ऐसा सजीव चित्र शायद ही अन्यत्र देखने को मिले। मार्मिक संवेदना, हार्दिक आवेग, एवं सच्ची अनुभूति के आधार पर रचित मीरा के गीत में जैसे हृदय की टीस बोल रहा है जो किसी भी सहृदय व्यक्ति के हृदय के तारों को झकझोर देने के लिए पर्याप्त है। इसलिए एक आलोचक ने कहा है — "पति-प्रेम के रूप में ढले हुए भक्ति रस को मीरा की संगीत-धारा में जो माधुर्य घोला है, भावुक हृदयों को वह शायद ही कहीं मिले।"

भक्त कवियों ने अपने पदों में भगवान की महत्ता का भी चित्रण किया है, पर उनमें दीनता टपकती है। पर मीरा के जीवन में घोर कष्ट होने पर भी दैन्य भाव का कहीं झलक नहीं दिखलाई पड़ता है। इसका कारण यही है कि मीरा ने अपने को ईश्वर से एकाकार कर लिया था। पत्नी के बिना तो पति अपूर्ण होता है। फिर पति-पत्नी के बीच दीनता का भाव कैसा? यही कारण है कि मीरा की प्रेम-साधना में जो प्रखरता दिखलाई पड़ती है, वह किसी और भक्त कवियों में नहीं दिखलाई पड़ती है।

मीरा के पदों में एक-साथ ही विद्यापति की भावुकता, सूरदास की भक्ति, कबीर का रहस्यवाद और जायसी की प्रेम की गहरी अनुभूति एक साथ दिखलाई पड़ती है। इस दृष्टि से मीरा की प्रेम- तमाम भक्त कवियों की प्रेम-साधना से बढ़कर है। श्रीकृष्ण के प्रेम में अपने को लीन कर देने वाली मीरा [illegible]। वह कहती है —

मैं गिरिधर रंग राती।
पंचरंग चोला पहिर सखि, मैं झिरमिट खेलन जाती।
ओहि झिरमिट माँ मिल्यो साँवरो खोल मिली तन गाती॥

इस प्रकार मीरा के प्रेम में पराकाष्ठा है और यही उसकी प्रेम-साधना की परिणति है।

□□

डा० अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा।
M: 9204396227

Scanned with CamScanner